

इकरार

डॉ. जितेन्द्र अढ़िया, एम.डी.



RUDRA
PUBLICATION

...publishing positivity...

25/B, Govt. Society, B/h, Municipal Market.
Off. C.G. Road, Navrangpura, Ahmedabad - 380 009.

Ph. : 079-26447393 • Mobile : 098259 25947

email : rudrapublication1@gmail.com

www.rudrapublication.com

Buy online www.clickabooks.com

For Home Delivery : Mobile : +91-99241 43847

इकरार
डॉ. जितेन्द्र अढ़िया, एम.डी.

Copyright @ Dr. Jeetendra Adhia

All Rights reserved. No Part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise without the prior written permission of the copyright owner

1st Edition - 1st November, 2013

₹ 35/-

: Creative Team :
Rajiv Bhalani, Ankit Pardhi,
Dr. Nishtha Dembla

: Hindi Translation :
Paresh Parmar

: Design & Layout :
Manu Patel
9898390057

: Printing :
Rudra Publication

: Publisher :
Adhia International
Ahmedabad
Ph.:+91-79-4003 5153
www.mindtraininginstitute.net



सप्रेम भेंट

स्नेहीश्री,

आपको उपहार देने के लिए मुझे किसी चीज़ की तलाश थी। क्या दूँ ? क्या न दूँ इसकी दुविधा थी।

आखिर मैं विकल्प मिल गया। मैं आपको एक नया ही उपहार देना चाहता हूँ।

मेरा यह उपहार आपके पारिवारिक जीवन को नया रूप देने के लिए अत्यंत ही सहायरूप होगा। काफ़ी आशा और विश्वास के साथ यह उपहार अर्पण करता हूँ।

इसका उपयोग अवश्य करना।

शुभेच्छा के साथ.....

सही :

तारीख :

अनुक्रमणिका

१. सोचने जैसी बात ५
२. क्या चुनी हुई राह सही है ? ७
३. गलत तरीका चुन ने का नतीजा ९
४. दरअसल होता क्या है ११
५. हमारी गलतफेहमियाँ १३
६. नई समझ नए कदम १५
७. गलतियों के प्रति जागरूकता १७
८. गलतियों कि खोज १९
९. गलतियों का इकरार २१
१०. अगर इकरार नहीं करेंगे तो क्या होगा ? २३
११. मातापिता की दुविधा २५

सोचने जैसी बात

विशाखा जब मेरे पास पर्सनल काऊन्सेलिंग के लिए आई तब बेचारी बहुत दुःखी लग रही थीं। मैंने उसे दुःखी होने का कारन पूछा। उसने बताया की मेरी शादी को सत्रह साल हो गए हैं। सत्रह साल से मैं ससुराल में हूँ। मेरे सास-ससुर पूरा दिन मुझे टोकते रहते हैं।

मैंने पूछा : “किस बात पर टोकते हैं ?”

विशाखा : कई बातों पर टोकते रहते हैं। घर के काम में नुक्स निकालते रहते हैं, रसोई में गलतियाँ निकालते हैं, मैं जब अपनी सहेलियों के साथ फोन पर बात करती हूँ तब भी टोकते हैं। मानो उन्हें पसंद ही नहीं।

मैंने पूछा : “इससे आपको क्या फर्क पड़ता है ?” और वह रो पड़ी। रोते-रोते बोलीं, “मुझे अन्दर ही अन्दर घुटन होती है। अब सहन नहीं होता यह सब.....मन करता है की कहीं भाग जाऊँ। लगता है जैसे की मेरे जीवन में सुख का नामोनिशाँ ही मिट चूका है। जैसे की इस दुनिया में मेरा अपना कोई नहीं, बस मैं अकेली हूँ।”

थोड़ी देर तक तो उसे रोने दिया फिर मैंने उसे पानी दिया। पानी पिने के बाद जब वह स्वस्थ हुई तब मैंने पूछा, “फोन पर आप कह रही थीं की आप अपने बेटे के बारे में कुछ बात करना चाहती हैं। उसके काऊन्सेलिंग के लिए आपने पूछताछ की थी।”

विशाखा : “हाँ सर, दरअसल बात तो उसी के बारे में करने आई थीं पर मैंने खुद की जिन्दगी से ही इतनी परेशान हों चूकी हूँ की अपना ही दुःख सुना ने लगी। मैं आप से यह कहना चाहती थीं कि मुझे मेरे बेटे ध्रुव की चिंता खाए जा रही हैं।”

मैंने पूछा : “क्या हुआ, किस बात की चिंता है ?”

विशाखा : “सर, उसे पढने में जैसे रुचि ही नहीं रही। अभी नौवीं में है। अगले साल बोर्ड की एक्जाम सर पर आ बैठेगी। फिर भी गंभीर

नहीं हैं। जब भी आप उसे देखेंगे या तो वीडियो गेम खेलता हुआ या फिर टी.वी. देखता हुआ नज़र आएगा। इधर किसी दोस्त ने आवाज लगाई और उधर दौड़ पड़ा बाहर। उसकी स्कूल की किताबे यहाँ-वहाँ बिखरी मिलेगी। नहाकर निकले तो बाल ठीक से पोछने के लिए भी डाँटना पड़ता है। खाने-पिने का तो कोई ठिकाना ही नहीं होता। इतना बड़ा हुआ फिर भी इतनी भी अक्ल नहीं आई उसमें ! इतने तक तो ठीक था पर अब तो उसने झूठ बोलना भी शुरू कर दिया है। सर, मैं तो दोनों तरफ से परेशान हो चुकी हूँ। यूँ ही अगर चलता रहा तो सच मानिये एक दिन मैं जरूर पागल हों जाऊँगी।”

मैंने पूछा : “तो फिर आप ने कौनसे कदम उठाये ?”

विशाखा : “क्या नहीं किया सर मैंने ? उसे सुना-सुना कर थक चुकी हूँ। चाहे जितना भी टोकू उसे कुछ असर ही नहीं होता। दिन में कम से कम दस बार उसे उस की गलती दिखाती हूँ पर वह सुधरने का नाम ही नहीं लेता। अब तो दिन में कम से कम एक बार उस पर गुस्सा होना जैसे मेरा नियम बन चूका है।”

मैंने शांति से पूछा : “आपके इन प्रयत्नों का कुछ असर हुआ क्या ?”

विशाखा : “असर क्या खाक होगा ? उसकी सुधरने की नियत ही नहीं है।”

फिर मैंने कहा : “अगर आपके सास-ससुर की वजह से आपको यहाँ काऊन्सेलिंग के लिए आना पड़ा है, यहाँ आकर आप रो पड़ी हैं और कहती हों की जिन्दगी आपके लिए बदतर हों चुकी हैं तो जरा सोचिये कि आपके टोकने और आलोचना करने से आपके बेटे पर क्या असर होता होगा ? आपकी आलोचना करनेवाले तो आप के सास-ससुर हैं पर आप तो सगी माँ होकर अपने बेटे के साथ ऐसा कर रही हैं। क्या लगता है आपको ? आप ही की तरह वह अपनी जिन्दगी से परेशान नहीं हो चूका होगा ?”

विशाखा स्तब्ध रह गई। फटी आँखों से वह मुझे तकती रही। उसकी तो “काटो तो खून न निकले ऐसी हालत हो चुकी थी।”

क्या चुनी हुई राह सही है ?

अब मैं आपसे एक सवाल करता हूँ। क्या विशाखा की तरह आप ने भी कभी आपके बच्चों को टोका है ? उनकी आलोचना की है ? या फिर बड़े हों जाने पर भी, आज भी आपको उन पर गुस्सा करना पड़ता है ?

मुझे आपका जवाब पता है। हम सब यही करते हैं। क्यों की हम सब अपने बच्चों का भला चाहते हैं। हम चाहते हैं कि उनके बर्ताव और व्यवहार सुधरे। चाहते हैं कि उनमें सद्गुणों का विकास हों।

सभी माँ-बापों कि यही तो इच्छा होती है और इसीलिए तो वे अपने संतानों को समझाते रहते हैं। पर जब वह समझते नहीं, हमारी बात नहीं मानते तो न चाहकर भी हमें उन पर गुस्सा करना ही पड़ता है, उन्हें टोकना ही पड़ता है, उनकी आलोचना करनी ही पड़ती है। और सारे रस्ते आजमाने के बाद भी अगर वे न सुधरे तो डाँट-फटकार भी करनी पड़ती है। सच हैं ना बात ?

पर अब मेरा सवाल यह है कि ऐसा करने से बच्चों के बर्ताव या व्यवहार में कोई बदलाव आया ?

समझाने से तो वे समझे नहीं पर गुस्सा करने से क्या उनमें अकल आई ?

जिन बात पर उन्हें बारी-बारी टोका गया क्या उनमें सुधार आया ?

उनके बर्ताव कि आलोचना करते रहने से क्या उसमे बदलाव आया ?

अब ज़रा शांति से बैठकर विचार कीजिये कि किस उम्र से आपको आपके बच्चों को टोक ने कि ज़रूरत पड़ी थी ?

तब से लेकर आज तक कि ऐसी घटनाओं पर ज़रा गौर कीजिए और ढंग से नतीजा निकालिए कि गुस्से और आलोचना के उपयोग से आपके बच्चों में बदलाव आया ?

बिलकुल नहीं।

तो इस से हम किस नतीजे पर पहुँचे ? हमारे बच्चों की गलतियाँ निकालते रहना, उन्हें टोकते रहना, उन पर गुस्सा करते रहना यह सब सही था ? उपयुक्त था ? किसी काम का था भी या नहीं ? असरकारक था ?

नहीं था ।

तो फिर इसका मतलब यह हुआ कि हमारे बच्चों में सद्गुणों का विकास हो, अच्छी आदतों का विकास हो और वे गलतियाँ करना बंध कर दे उसके लिए हमने जो राह चुनी, जो कदम उठाये, जो तरीका अपनाया है वह सब गलत थे । मतलब कि हम सही राह चुनने में नाकामयाब रहे । बुद्धिमान होने के बावजूद । पढ़े-लिखे होने के बावजूद भी ।

लेकिन ऐसा क्यों हुआ ?

क्योंकि हमारे पास कोई चारा ही नहीं था ।

दूसरा कोई साधन ही नहीं था । जितने भी साधन थे उन में से जो सही और श्रेष्ठ लगा उसे चुन लिया ।

अच्छा चलिए, कोई बात नहीं ।

लेकिन जितना गुस्सा किया,

जितनी आलोचना की,

जितने नुक्स निकाले

उसका कुछ तो असर बच्चों पर हुआ होगा ना ?

बात तो सही है ।

हर बात का कुछ न कुछ तो असर होता ही है ।

आइये देखते हैं,

दरअसल असर क्या हुआ है और कहा हुआ है